

①

॥ अक्षर ॥



2

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसत्याय नमः ॥ श्रीगुरुदेवय नमः ॥ श्रीसरस्वतीय नमः ॥ ६॥

अनमोसद्गुरवीसमुद्रा ॥ मुक्तमोतीयावातुजमाजीथारा ॥ ज्ञानंवेशम्यशुकीद्वारा ॥ प्रसाधनरा
तुं देसी ॥ १ ॥ तुझीखोकीअंमर्याद ॥ माजीवीद्रेहेअतीवीविधि ॥ देखोनीयांनीजप्रबोधवांदा ॥
परीयेअगादतुजदोटे ॥ २ ॥ उयळक्याखानटेपरीयासी ॥ गुरुआज्ञामर्यादानुकंघीसी ॥ स्व
नंदकहरीचढोवडीसी ॥ तुजमाजीअहीगीसीउरळीति ॥ ३ ॥ ब्रह्मवीदयामाहाबदर ॥ तेथे
नीजमकीहेतारथार ॥ यासीवागवीतनुकुवधार ॥ प्रेमावेसाचारवढवीसीसीडां ॥ ४ ॥ त
येमकसतसज्ञाननर ॥ स्वयेपावनीसीपरपासायावीमागुतेनयेरसार ॥ सयसाचारखुंठकी
॥ ५ ॥ येककांउंनीयांकासेसी ॥ पवसागरीवागवासी ॥ बुडव्यांवेपयेयासी ॥ माहाकल्पेसीवा
धीनां ॥ ६ ॥ येकबुडालेपकीसमरसी ॥ तेद्यातलेसेखशयेनांपांसी ॥ येकबेसवीलेषढकवेसी
तेब्रंहादीकांनढळनी ॥ ७ ॥ तुझीयासागरवाचीपरी ॥ वीजातीयेतीकपरी ॥ राहोनेंहीसीसी
तरी ॥ हेअगादयोरीपंतुसी ॥ ८ ॥ अहतप्रळंठजेहावढे ॥ तेससारहेनोवबुडे ॥ वेकुंठकेळासा

28

वरीतावाडे ॥ मागे पृढे हा वीहा ॥ ११ ॥ हे सी ये सजुरसमुद्रोदकी ॥ ये काये कपठं हरीतकी ॥ सीत
 र पडता अथ श्यकी ॥ अंगीकारीकी जनादेनुं ॥ १२ ॥ तो जना देनु स्वये देखा ॥ ये कादशा वी करी
 तेणे अतंगी घाकुनीये का ॥ कवी त्को कावे कवी ॥ ११ ॥ जनादेना आवडे ये का ॥ तो ये का मी से तता
 वी देख ॥ नीजासंसा वं पडिके दे कथ ॥ आपुलं नी जसुख बो लवी ॥ १२ ॥ बो लवी नी जसुखा
 कथा ॥ या सी आप ठा वी हो ये आता ॥ मग अर्थ्या ये थार्यता ॥ सावधानं ता दे तु से ॥ १३ ॥ या प
 री गा जना देने ॥ ये काद शुभ हा वा करणे ॥ नर हा संक की वे बो लने ॥ हे स्व ये स ज्ञाने जने
 जे ॥ १४ ॥ या ये कादशा वी गद कथा ॥ शु कृ ठे सा व सं पना ॥ गुण दो शा वी जे का ही वा ता ॥ उधवा
 सी तत्र ता सा गीत ती ॥ १५ ॥ गुण दो शा जे देख ब ॥ तो वी मा हा दो षु ज्ञान ठं ॥ गुण दो शा स्व ये न
 देख ठं ॥ तो गुण म्या श्री मा णी जे १६ ॥ हे हे कानी दे वा जे उ त्त र ॥ उध उच म कारी का थो रा ॥
 का ये गुण दो षा मा वी वार ॥ बरो घर को की कला ॥ १७ ॥ तु ही मी वे दु मुखे आप ठं ॥ प्र गती के
 गुण दो शा ल स ठं ॥ वी मारी ता ते वे दे व व नं ॥ क वी अ म न्य करा वं ॥ १८ ॥ हे से वी धी नी ष ध क

(3)

संतां॥ वीशाशितांतेवेदवचनं॥ कांयांनिषधीतो श्रीरुद्रं॥ उधउ गोप्रसखयंपुसे॥ १९॥ वीसा
 वंजध्यांनिरोपतां॥ सांगायागुंतादोशकसुंतां॥ सतीज्ञानं कर्मजातां॥ तीन्हीअधीकारकी
 न्नसांगेत्ता॥ २०॥ उधउं म्हां श्रीरुद्रं॥ तुंवेदरुपंआपतां॥ बोकीकासीदोशगुंतां॥ तेपरम
 प्रमांतांजाहीमांनुं॥ २१॥ हावीधीहानीशोधं॥ हेदावीताहेरुसावेद॥ तोवेदानुवादवीशद॥
 वेकप्रसीधसांगेन॥ २२॥ **उधउवाच॥** वीधीअप्रवीपथश्चेनीगमोहीश्वरस्यते॥ अवेस्यतेऽरवी
 दास्यगुंतादोषंयकर्मणा॥ २३॥ **टीका॥** कमनयना श्रीरुद्रं॥ वीधीनीशोधकसुंतां॥ दाख
 वीतसेदोषगुंतां॥ तुसीवेदाज्ञाप्रसीधा॥ २४॥ तुस्यावेदावेवेदवीधी॥ गुंतादोशीजउत्नीवुधी
 तंमीसांगेनप्रसीधी॥ कुपानीधीअवधीशी॥ २५॥ **श्लोक॥** वणीश्रमंवीकल्पंमुप्रीतीतांमांनुके
 मजं॥ द्रव्येदेजावयःकाळंस्वर्गनरकमेवव॥ २६॥ **टीका॥** तुसीजेगावेदवाणी॥ उद्युतीगुंतां
 दोषायाखाणी॥ अथममध्यमोचंममाउनी॥ वणीश्रमीसेदुदावी॥ २७॥ द्रव्यवीहीतअवहीत
 हेहीवेदुषदाखवीत॥ देपुपुनीतअपुनीत॥ काव्हीदावीतसुष्टुदुष्टत्वं॥ २८॥ पुर्ववर्धनीनेनी

॥११॥

॥११॥

3A

श्रीत्र॥ तारुष्यं ते वीकां मज्जात् ॥ बाधक्ये ते अतीकृ श्रीत्र॥ ते वीसुधी उपजवी त गुण दोष
 वेदु ॥ २७ ॥ तु सा वीगा वेदु देख ॥ सु वीता हे स्वर्ग नरेक ॥ वेणं कर्मा वे अवश्यक ॥ साधक बा
 धक तो दावी ॥ २८ ॥ वर्णां श्रमां मा जी क गुज ॥ प्रतीको मां नु को मज ॥ दे से नां नां पे द फो ज ॥ वे
 दे वी स ह ज ना व वी जे ॥ २९ ॥ उत्तमं वर्णा वी जे ना शी ॥ ही न वर्णां वा ग र्मु ध री ॥ ती वी सं त
 ती सं सारी ॥ अ सी धां न ध री प्र ती को म ज ॥ ३० ॥ ते वी सं त ती प्र सी ध ॥ सु त वे दे हे मा ग धा ॥
 ऐ सी या नां मां वे जे प द ॥ ते जां गं लु ध प्र ती को म ज ॥ ३१ ॥ ही न वर्णा वी जे ना शी ॥ उत्तमं पुरु
 षा वा ग र्मु ध री ॥ ते अ नु को म ज सं सारी ॥ सा ख का री बो ली जे ॥ ३२ ॥ अ षं षु षां णी मु ध री
 व सी क ॥ प्र वृ ती का स्त षां णी सा र श्व त ॥ ए सा दी नां वी जे व र्त्त त ॥ ते जां णां स म स्त अ नु को
 म ज ॥ ३३ ॥ दे से नां नां पे द प्र का र ॥ अ वी धी वी धी वा वी चार ॥ वे दु प्र का सी तो सा चार ॥
 गुं णां दो षा मा हे वे दु तु सा ॥ ३४ ॥ **श्लोक** ॥ गुं णां दो षा दा वृ षी मं त रे ण व च स्त व ॥ नीः अ य सं
 क थं नु णां नी रो ध वी धी ल श्च णं ॥ ३५ ॥ **टीका** ॥ हे गुं णां षां णी हे दो र व ॥ उ ष य ता वै रा ग्य

(5)

॥३॥

॥३॥

॥३॥

कावीदेख ॥ तुसावेदुगाभवस्यक ॥ होयेप्रकाशकगुणदोषां ॥ ३५ ॥ वैरकांउनीवेदवांणी ॥
 वाढवीगुणदोषमांउनी ॥ तेवमोसुपावीजेप्रांणी ॥ वेदवचनीचडेकेवी ॥ ३६ ॥ राउळबोकी
 लेजापंठं ॥ जेनदेखावेदोषगुणं ॥ तुंचीमहंतासीवेदुप्रमांणं ॥ तेदोषगुणदेखावे ॥ ३७ ॥
 यवैकतांतुसेवचनं ॥ उभयताप्राकीनांगवठा ॥ वेदुप्रमांणकीअप्रमांणं ॥ हेसमुक्
 जांणकळेनां ॥ ३८ ॥ तुस्यावचनांवीष्वासावं ॥ तेगुणदोषनेदखावे ॥ तुसेवेदवचन
 मांनावं ॥ तेदेखावेगुणदोषां ॥ ३९ ॥ हेतुवचनीबोकेजांणं ॥ संशयपडिलेसज्ञान ॥
 मांठतरसाधारणजनं ॥ यांचीकथाकाणयवंठं ॥ ४० ॥ आशंक ॥ मासेवचनवेदवच
 न ॥ दोन्हीयेकरपेहंतासीप्रमांणं ॥ तरीगुणदोषादरुजांणं ॥ कांपांवीकसंणपरस्परं
 ॥ ४१ ॥ मास्यावेदांवेवीधीवीधानं ॥ नहतांवेदार्थीचेज्ञान ॥ म्हणंसीमोसुनचडे
 जांणं ॥ वेदुप्रमांणंयाहेतु ॥ ४२ ॥ यामोक्षामाजीकायेकरीनं ॥ सकळकर्मसांडी

40

तांजांजां॥ चरमो सुये आपणं॥ सह जे जीजांजांन प्रार्थितां॥ ४३॥ म्हणंसी वे दार्थुन
 कळतां॥ कर्म करीतां कांयागीतां॥ कदा मो सुनये हाता॥ जांजां तले तानी श्चीत॥ ४४॥
 मासना दोरा वा सर्प शेर॥ तेथे जपवांना नाम वारा॥ करीतां राजां जांजां वाग जरा
 मारीतां तीर दळेनां॥ ४५॥ तोसा दरे नीरे छीतां जांजां॥ हो येया सर्पा वें नीर जांजां
 तेवी नीधीरीतां वेद वचनं॥ सव सये जांजां नीर रो॥ ४६॥ सव सया जीनी मुक्ता॥ शानां व
 मो सुजांजां तलवा॥ तो वे दार्थे जीजांजां ता॥ नये सर्वथा आंणीकां॥ ४७॥ वेद वीथां नन
 करीतां॥ कर्म यागी केठ द्रुत्ता॥ ते वे नीज सो सुनये हाता॥ परी पाखां उ त्या आंजी
 वा ले॥ ४८॥ वीधी कक जो कर्म यागु॥ करनी संन्या सुये त कथा सांगु॥ ते म्हणंसी
 नपडे वेद पांगु॥ हा ही व्यंगु वी वास॥ ४९॥ अवगांग संन्या संग्रहं जां॥ तेथे ही आ
 हे वेद वीथांनं॥ गुरुमाहा का कथ जे अवगां॥ तो ही जांजां वे दार्थु॥ ५०॥ आंकां॥

5

॥४॥

करीतां देवां पीतरां चैष जंनं ॥ ते होठं नीयां प्रसन्नं ॥ मोक्षु दे वी आ पणं ॥ हे ही वेदे
 वी न बडे नां ॥ ५१ ॥ स्वाहा कारं चु प्रसुर ॥ स्वधा कारं चु स पीतर ॥ वेद नीयां ग वी न पी
 तर सुरा ॥ प्रसन्नं कार क दान कृ ती ॥ ५२ ॥ **श्लोक** ॥ पीतु देवमनुष्याणां वेद व सुसवे
 श्वर ॥ अथ सनु पत्न्ये र्थे साध्य साधन योरपी ॥ ५३ ॥ **टीका** ॥ नाथी ले वी च रा चर ॥ देव
 मनुष्य आं णी पीतर ॥ वेदे प्रका र्णु नी सा चार ॥ पुज्ये तं थोर प्र ती या दी ॥ ५४ ॥ सा ही मा
 जी ष ती वी शमं ॥ उत्तमं मध्यमं अधमं ॥ इ ती वी धने द सं प्र मं ॥ वेदु उ प क्र मं कर
 नी दा वी ॥ ५५ ॥ या प री गुं गं दोष ल र्णु वां यी वा ढ वी ले आ पणं ॥ या नां व म्हे गं
 स्ती मो क्ष सा धन ॥ तरी कां दोष गुं गं नी वा री सी ॥ ५६ ॥ हे सी या नी रो प णं घ उ मो ही
 तु से नी बो ले प डे आ दी ॥ ते गं गुं गं दो शां वी पर व डी ॥ बा धा रो क डी आं गी वा ले ॥ ५७ ॥
 ष व घा सं सा र क क्प नी क ॥ त र्थे ये क स्व गे ये क न र क्क ॥ हा मो क्षु ह्य व ध क्क ॥ ये गं वे

स्त

॥४॥

(58)

दवा दे लोक प्रमीले तुंवां ॥५७॥ **श्लोक** ॥ गुंठा दोष मीदा द्रुष्टीर्नागमातेन ही स्वतः ॥ नीगमे
 नापवादश्च मीदाया र्थती ह प्रमः ॥५८॥ **टीका** ॥ एवंनां नां गुंठा दोष द्रुष्टी ॥ तुसे नीवेदे वाढवी
 ले सुष्टी ॥ स्वतापुत्रषात्रे पोटी ॥ गुंठा दोष गोष्टी जसेनां ॥५९॥ तुस्या रे दांनुं वादवी स्तारं ॥ गु
 णं दोष जा ले खरे ॥ ते तुसे नी ही व का शरं ॥ नीग बा ही रे न नी घ ती ॥६०॥ जना दी वे दु प्रमां
 णं ॥ हे तु से मु ह्म व चनं ॥ जांतां न दे ख वे दो ष गुंठां ॥ हे न वे व चनं मां ने नां ॥६१॥ प ही ले
 प्रकाशी ले दो ष गुंठां ॥ जांतां नी सं का रा या का र का रं ॥ हे न कळ तां पू णं ॥ प्रमी तं मं नू
 हो त से ॥६२॥ या प्रमां वी प्रम नी वृ ती ॥ ए प न वा रा वी द्य पा मू र्ती ॥ ये को नी उ ध वा वी व को
 की ॥ का ये श्री प ती बो ली ला ॥६३॥ ये को नी उ ध वा वी वी न ती ॥ यो ग त्र या वी उ प प ती ॥ अ
 धी कार से दे वे दार् य प्राप्ती ॥ स्व ये श्री प ती सं ग तु ॥६४॥ **श्री स ग वा नु वा नः** ॥ यो ग स्व ये
 म या प्रो क्तानुं णां जे यो वी धी स या ॥ ज्ञां न क र्म व स क्ती अ नो पा यो न्यो स्ति कृ त् वी त् ॥६५॥

6

टीका ॥ तेथे मेव गंभीरवांणी ॥ गर्जनी बोके सारंगपाठी ॥ माझे परम स्वये वां कुंती ॥ मा
 सी वेदवां नी कळेना ॥ ६४ ॥ वेदशास्त्रार्थ अती संपन्न ॥ जही जाले गंधर्वनं ॥ परिमास्या
 अनुग्रहे वीन ॥ माझा वेदार्थ जगं कळेना ॥ ६५ ॥ ब्रह्मां वहुं मुखे वेदु पडे ॥ या सही वेद
 र्था वेवो खडे ॥ वर्मनां तुडे वीध उफडे ॥ मांड वरवा पूडे तें काठे ॥ ६६ ॥ मास्या वेदाचा वेद
 नीर्धार ॥ तुज मी सांगेन सावारा ॥ एक उधवा सावारा वेदवीचार तो हे सा ॥ ६७ ॥ मास्या
 वेदासीना ही बहु बंड ॥ व्रथानबे न वे उदड ॥ ज्ञानसत्कर्मकांड ॥ वेदु वीकांडने मच्छ
 ॥ ६८ ॥ माझी या वेदाची वेदोक्ती ॥ या वीही योगाप्रतीपाहीती ॥ या वेगळी उपाये रूचीनी ॥ नं
 हीनी श्वीती उधवा ॥ ६९ ॥ कोठांते तीही योग ॥ केसे अधीकाराचे साग ॥ हे ही प्रससी कुं
 वांग ॥ एक सांग सांगेन ॥ ७० ॥ **श्लोक** ॥ नीर्वीणांना ज्ञानयोग्या सीनामी हकर्मसु ॥ ते
 षु नीर्वीणाची ज्ञानां कर्मयोगस्तकां मीनां ॥ ७१ ॥ **टीका** ॥ जेकां ब्रह्मसूवनपरीयेत ॥ सावा
 रजीची होउनी वीरका ॥ जे वीधी पूर्वक संकल्प्य अक ॥ कर्मयागी तें संन्यासी ॥ ७१ ॥

१५५॥

२॥६

१५५॥

61

ऐसीया अथी कायां कारणं ॥ म्यांज्ञानयोगुप्रगटकरणं ॥ जोकानीज ॥ ज्ञानसाधनें ॥
 मजपावणं सायोज्यता ॥ ७२ ॥ जेकां केवळ अकीरक ॥ वीजायां कागी कामां शक्त ॥ यां कागी म्यां
 प्रस्तव ॥ कर्मयोगयेथ प्रकाशीता ॥ ७३ ॥ उंचनीच अथी कार देख ॥ दोन्ही सांगितले सवी जो
 ष ॥ आंताती सरा अथी कार अती चोरव ॥ अकोकी कसां गेनु अव धारी ॥ ७४ ॥ **श्लोक ॥** यद्
 छयामकथादो जात अधस्तयः प्रसांनं ॥ नवनी वीणा नाती सक्तो म क्तियोगस्य सी थी दः ॥
 ॥ ८ ॥ **टीका ॥** हरिकथा अवघे वी एकरी ॥ कर्ना श्री अथानुपजे सी ती ॥ को छिंये का असी
 नव गती ॥ अथाउपवी अवणी होये ॥ ७५ ॥ अक अर्थ ये त शृंग ॥ जे जे करी ती कथा अवणं
 ते हृदय वाटे अनुसंधानं ॥ स प्रेम मंन उक्ता सा ॥ ७६ ॥ नवक्तकथे वी आव डी ॥ दाट ती हरी
 स्वा वी या को डी ॥ हृदयं स्वानं दा वी उपी उ डी ॥ ये व डी गो डी अवणार्थी ॥ ७७ ॥ वीष यां वे दो
 ष हर ज्ञाणं ॥ मुस हें बाध करि थनं ॥ आव शं वे र सना शी अं ॥ हे आठ वं नं अही नी सी ॥ ७८ ॥
 धां ठ अउ कले फळे ॥ तं पां न पे नां उ प-कार बळे ॥ ते वी वी ष य दो षु सो ग मेळे ॥ कदा काळे श

(2)

नां
॥६॥

मेनां ॥०९॥ ये तां देखोनी मरुणं ॥ स्वये होये कं प मां नं ॥ ते वी वी प य भोग हरुणं ॥ देखोनी
 व्यापणं वळी कां पें ॥१०॥ हे से वी शं ठो शं द र शं ठं ॥ सर्व दा देखे व्यापणं ॥ परी या गा ला गी
 जां णं ॥ सामर्थ्य पूर्ण आधी नां ॥११॥ से व की रा जा वं दी धरी ला ॥ स्त्री चं द ना दी भो गु दी थ ला
 तो या सी वी श प्रा ये ला ला ॥ परी भो गी ठ ग ला अ ग य ता ॥१२॥ ए वं भो गी तां यां भो ग सी ॥ नी य पा
 हे नी ज नी ग मां सी ॥ ते वी भो गी तां ह वी श यां सी ॥ अ ह नी सी अ नु ता पी ॥१३॥ था परी न हे जे
 वी श या श कु ॥ नां मी थ डान हे जो वी र य ॥ या का गी भ सा म क्री पं थु ॥ मी बो ली लो नी श्वी
 तु वे द वा क्ये ॥१४॥ ये ही करी तां मां सी म की ॥ मां सां स्व र पी ला गे प्री ती ॥ सह जे हो ये वी श ये वी
 र की ॥ ए वं सी थी रा ती म क्री मा सी ॥१५॥ मी वे दो क्त बो ली लो व्या प णं ॥ ते हे त्री वी थ यो ग संप्र
 णं ॥ ज्ञां न क र्म उ पा सं नं ॥ वे दो क्त क र्म वं वी भा ग ॥१६॥ ये थं कां णं देखे दोष गुं णं ॥ को णां सी
 दो न्ही वें अ द र्शे णं ॥ म्ध्यं भं भा गे व त्ते को णं ॥ ते ही ल स्र णं अ व धा शी ॥१७॥ जो आ श कु वी
 श यां वरी ॥ तो क र्म मा गी ना अ धी का री ॥ या सी गुं णं दो शं हा ती उ री ॥ हे सां गे ला श्री हे शी

॥६॥

278

पुटी कथाध्यां ॥ ८८ ॥ जोकां वीरकु शानां धीकारी ॥ तो गुणदोषां हींनी वाहेरी ॥ तो पाहा तो अ
 वघे संसारी ॥ न दे खेती वृ मरी गुणदोष ॥ ८९ ॥ अती व्याकुनां वीरकु ॥ ऐसे जेकां माझे मक
 ते पूर्वी गुणदोषां देखत ॥ परी सांहीत वीवेकें ॥ ९० ॥ पुती पुतासां मी परेश ॥ तेथे देखो नये
 गुणदोषा ॥ ऐसे मज न नीष्ट राजहंस ॥ ते गुणदोषां सांहीती ॥ ९१ ॥ मी वेदार्थ बोकी तो दोष
 गुण ॥ ते दोष या गाळी जाण ॥ परी ये देखे दोष गुण ॥ हे वेद वचनं असेनां ॥ ९२ ॥ ऐसे
 करावे वेदार्थ श्रवणं ॥ दोषां गुणध्यास गुणं ॥ परी पुढी नाचा दोष गुण ॥ सर्वथा अपां
 न देखावा ॥ ९३ ॥ जो ज्या वे गुणदोष पाहे ॥ त्या पापास वी मगि होये ॥ जो पुढी कांवे गुण
 दोष गये ॥ तो नीरय जाये तेणें दोषे ॥ ९४ ॥ जातां कर्माचा अर्थी कार ॥ सांगता हे सां गथर ॥
 तो जाणोनी यां वी चार ॥ कर्मादर करावा ॥ ९५ ॥ **स्तोत्र** ॥ ताव कर्माणी कुर्वीत न नीवी द्यत या
 वता ॥ मकथा अवगां दोषा अधाया वन्न जायते ॥ ९६ ॥ **टीका** ॥ तं वं वी करावा कर्मादर ॥ जं वं वी
 रकी नुपजे साचार ॥ **स्तोत्र** टीकी कथां वीरकी वेदर ॥ स्वर्ग संसार मळ प्राये ॥ ९७ ॥ हो कां व मी

तो

8

कीयामीष्टान्ता ॥ परतोनी अधानधरी रसना ॥ तेवीवी शयेमोगी जांठां ॥ सा वारमनां वी
 कसी उपजे ॥ ९७ ॥ तेथं कर्मा वीपरी पाटी ॥ समुच्च खुटकी गोमी ॥ कांदै वयोगे उल्हा सुपो वी
 मासे कथे वा उमी अवठां दर ॥ ९८ ॥ करीतां मासे कथा अवठां ॥ प्रेम बोसं दे अंतः करण ॥ वी
 सरं देह गे हा वी छाठवन ॥ तेथे प्रसवा युजांठां बाधीनां ॥ ९९ ॥ जेसें मासे कथे वें अवठां ॥
 तेथे प्रसवा युधरी वरठां ॥ येथुं बुबा वनं मासी जातो ॥ १०० ॥ करीतां मासे कथा अवठां ॥ कोट कथा
 कोटी कर्मा वरठां ॥ प्रसवा युन बाधी जांठां ॥ पपूर्णा कथे वा ॥ १०१ ॥ यल्लुटे मासे कथे वें
 महीमांनं ॥ मासे करीतां की तेन पुजन ॥ तेथे प्रसवा याजे नों उ कोठां ॥ जेस मुख वदंन दां उं सके
 ॥ १०२ ॥ हो का पूर्णा वीर कान ॥ कां मासे सेव सी जो न सर ॥ तेथे कर्म बापुडे की कर ॥ हे स्वये अधि
 रवो की ला ॥ १०३ ॥ कर्म करीतां स्वधर्म स्वीती ॥ उध वा जाहे मा सी प्राप्ती ॥ ते मी सांगे न तुज प्रती
 येथानुी गु ती अवधारी ॥ १०४ ॥ **श्लोक** ॥ स्वधर्म स्थायं ज न्ये शैर नां ङीः कांम उध व ॥ न या ती
 स्वर्ग नर को य स्य न्यन्नं समां वरे ॥ १०५ ॥ **टीका** ॥ ग्रह रूपां श्री मी स्वधर्म स्वीती ॥ जरी वा वरे ना

१०१

१०१

8A

अन्य गती ॥ त शिथेयं वीलाहेवीरली ॥ सुनीञ्ची ती उधवा ॥ ५ ॥ अन्य गती वेवीवरणं ॥ तेंतुं हं
 णं सीलकोंढां ॥ ऐक्यायें हीलक्ष्णं ॥ समुखसुणं सांगेन ॥ ६ ॥ परद्रव्य परदाररती ॥ परापवा
 दा वीवदंती ॥ घ्याहीनावे नरकगती ॥ जाणनीञ्ची ती नीर्धास ॥ ७ ॥ दीवी भोगा वेनी श्रवणं ॥
 ज्या ज्या मना वे वै सधरणं ॥ कर्म तदनु कुळकारणं ॥ ते स्वर्ग भोगनें जलोत् ॥ ८ ॥ या जाणं दोही अ
 न्यं गती ॥ यांतुं नुं काढं नीयां वृती ॥ ये ज्ञा दी की मज यज्ञी ॥ नेरा शस्त्री ती नी सुने मीये ॥ ९ ॥ दे
 न पडे स्वर्गा ये पेढां ॥ न घुडे नरका सी जां णं ॥ ते वी लोकी वीरक होढां ॥ वे वी वोलणे हरी वा
 ले ॥ ११० ॥ **श्लोक** ॥ अस्मी लोकेव ते मानः स्वधर्मज्ञानघुषु वी ॥ ज्ञानवी शुधभा प्रोती मद्द
 की वा ये हृद्यया ॥ ११ ॥ **टीका** ॥ अस तां ये लोका वनां न ॥ ऐसे करी तां स्वधर्मा वरणं ॥ होये पुढं
 पापा ये नी देळनं ॥ नीर्मळते जां णं तो अती पवी व ॥ १११ ॥ ते थं नी रसुं नी सवसांनं ॥ प्रकाश
 मा सें शुध ज्ञानं ॥ कां स प्रेम मा सें स जंनं ॥ परास की जां णं तो काहे ॥ १२ ॥ जे स की मा जी मी
 आपणं ॥ सदा होये स कां आधीनं ॥ ते ये मोक्षे स ही त ज्ञानं ॥ ये उं नी जां णं पां यो लागे ॥ १३ ॥

9

जे क ज्ञानां वापरीयाक ॥ संसारनां व माहा दुःख ॥ मोक्ष तो म्हणें परम सुख ॥ मद्ध कदे
 स्व दो न्ही न मनी ॥ १३ ॥ सप्रेम करीतां मा सें प लन ॥ ना ठ वे स व स ये बंधन ॥ ते ये मो सा
 सी पु से को ठां ॥ मद्ध की वा पूर्ण उ क्हा सु ॥ १४ ॥ ज्या ते म्हण ती माहा दुःख ॥ ते स का सी स ग
 व द्हु प दे स्व ॥ ज्या ते म्हण ती परम सुख ॥ ते ही अव ष्य क म ग वं दु ॥ १५ ॥ या प री स क मा क्षां स
 ल नी ॥ वी स र का सु ख दुःख दो न्ही ॥ मो ये क म ग वं ता वा नु नी ॥ आं न त्री पु व नी दे से नां ॥ १६ ॥
 हे सी मा क्षी स की पूर्ण ॥ सा धुं नी आं गी ता न ये लो पां ॥ जे सी स ग वं तु हो ये प्र सं न्न ॥ ते य दृ ष्ट
 जां ठां हे स की ना स ॥ १७ ॥ मी के से नी हो ये प्र सं न्न ॥ ते सं क ल्पी क तु सं म न्न ॥ ते यं न र दे ह
 गा कार णां ॥ मा सें प्र सं न्न पं ग हो आं व्या सी ॥ १८ ॥ **टीका** ॥ ज्या सी स्वर्ग भोगाची थोर जोडी
 जे ही अ म र ता ची उ सी की गु ढी ॥ जे प डी के स्वर्ग वे बां द व डी ॥ ते वां छी ती आव डी न र दे हां ते
 ॥ १९ ॥ न र क या त ना मा हा थोर ॥ जे ही भो गी ना भो ग थोर ॥ ते म नु ष्य दे हां वे र ॥ अ ती सा
 द र वां छी ती ॥ २० ॥ न र दे हे पर म पां न न ॥ जे स की ज्ञानां वे आ या त न ॥ जे ठो सा ध व्रं ह् शां

॥६५

॥६५

न॥ तो धन्य धन्य नर देह ॥२१॥ जे णे नर देहें जांण ॥ नी शे करुं टे जन्म मरण ॥ जे णे जीउ
पावे समां थानं ॥ खान दान स्वये होये ॥२२॥ ज्या नर देहा ये संगती ॥ होये वी द्ये वी नी
वृती ॥ कामे सगव सदा प्राप्ती ॥ हे वी स्थानी नर देही ॥२३॥ ज्या नर देहा की प्राप्ती ॥ प्राणी म
त्र वा छीती ॥ प्राणी बापूडे ते कीती ॥ स्वये प्रजापती नर देह वां छी ॥२४॥ ऐसे नर देहा ये संसृ
पंढां ॥ जे ये सार्थे सकी ज्ञानं ॥ परी सकी ज्ञान स्वव जांण ॥ मनुष्ये पण सार्थे नां ॥२५॥ **को**
का ॥ न नरः स्वर्गती कांसे न्नार की बावी वंशजाः ॥ ने मं लोकं च कांसे त देहा वे ज्ञा सुमा
द्यती ॥१३॥ **टीका** ॥ जाकी यां नर देहा सी प्राप्ती ॥ अधर्म होये नर कर्माती ॥ कांसे शी ता पू
ज्य संपती ॥ ते णे स्वर्ग प्राप्ती वनी वार ॥२७॥ स्वर्ग होये पुनरावृत्ती ॥ नर कि बोर दुस्व
प्राप्ती ॥ सांडू नी दोही वी प्रीती ॥ नर देही जा जकी धरं म्हं ढसी ॥२८॥ मनुष्य देहा वी
जावडी ॥ ते वी देह बुधी शे कही ॥ जे ये कामं को धको पा वी जाठी ॥ प्रमाद को डी शंण

10

दृशां ॥२९॥ स्वर्गनरक ईहलोक ॥ या श्री प्री तिसां इं निदेख ॥ साधा वेगा अवस्यका
 ज्ञानयोरवकांनी जभकी ॥१३०॥ ज्ञानसाधा व्याकागी जांणं ॥ कष्टां वें न लगेगा जा पणं ॥
 सप्रेम करीतां माझे फलनं ॥ दवडीतां ज्ञानघरी शिष्ये ॥३१॥ गडां श्री रासी जोडी क्यो हो
 ती ॥ सकळ पक्काने या श्री होती ॥ वेदीं उरल्या माझी फकी ॥ ज्ञानसंपत्ति धरासि ये
 ॥३२॥ द्रव्य जालियां जा प्रकृते हति ॥ सकळ पार्थ वराये ति ॥ ते विजे उरल्या माझी फकी
 भुक्ति मुक्ति दासि हो ति ॥ क्रो ॥ मृग शिकरी या गवदू ति ॥ विद्ये प्रव्या व्या जा उवि
 ये ति ॥ मिसु दर्षन घे उं नि हा ति ॥ राखे ज्ञाना ति नी जभका ॥ ३३ ॥ पद्मा ये निना मोका
 रं ॥ म्या वे शा तारि नि स्वकारे ॥ पा उं नि वी घां श्री दा तारे ॥ म्या व्य षि व्या रे उ धरि कि ॥ ३४ ॥
 या कागी नर देह पावोनं ॥ जो करी माझे फलनं ॥ तो श्री संसारी धन्य धन्य ॥ उध वा उ
 गां वी शुधी ॥ ३५ ॥ सा वे करी तां माझे फल सि ॥ सा वि क उ धारि मि ह षि को री ॥ जे

॥९॥

॥९॥

101

ढले ज्ञानां सिमानासि ॥ तेभ्यां ये मांसि निरोपिते ॥ ३७ ॥ साधी तां मासी पत्नी कां ज्ञा
 नं ॥ ज्यासि च ढे ज्ञानासिमानं ॥ तेभ्यां अपुले नी हो ते जां गं ॥ दिथलेषां दनमा हो वे
 षां ॥ ३८ ॥ उध वा तुं दे से हं वासि ॥ ते कां दिथले ये मां पासि ॥ तो जा सुं नियां मा हा दो वि
 ज्ञानासिमानासि सा उ वि ॥ ३९ ॥ या का गि सा उं नि दे हा सिमानं ॥ पां वे करी तां मा संप
 जनं ॥ पूर्विल साधु स ज्ञान ॥ नर दे हे जां गं स ज पा व ले ॥ १०० ॥ **श्लोका** एत द्वी द्वान्पुरा मु
 योर म वा ये द्वे दे तसः ॥ अप्र म त उं दे ज्ञाना मं य म प्य थ सी थी दं ॥ १०१ ॥ **टीका** के व ल्ब ल्ब
 वर्म मु त्र म ल्ब ॥ पा हा तां दे हो ष वि क ल्ब ल्ब ॥ पा री कं हं प री पू र्णे नी च्च ल्ब ॥ हे नी मि ल्ब प
 ल्ब ये गं सा धी ॥ १०२ ॥ दे से न र दे हा वे का र गं ॥ जां गं न पू र्वि ल्ब स ज्ञानं ॥ सां डू नि यां दे हा
 सिमानं ॥ ब्रं हं स मा थां न पा व ले ॥ १०३ ॥ दे हो नी द्य हं गी नि सां हा वा ॥ त री वे व ठा ल
 मु हा र वा वा ॥ वं द्य हं गी नी प्र ति पा षा वा ॥ ते ने ई ल री र वां नि ष्चि त्त ॥ १०४ ॥ दे हो

(11)

सांता वानां मां तावा ॥ ये तं परं मार्यु विशाधावा ॥ तं सावधं जे क उधवा ॥ गुप्त निव
 वे वासागे नं ॥ ४४ ॥ जे गे दे हे वा दे म व सावो ॥ ते गं वि दे हे करि पा हो ॥ हो ये सं सा
 रा या अ सावो ॥ अ हं सावो सां डि तां ॥ ४५ ॥ सा रा व या दे हा मि मां नं ॥ पूर्विक सा धु स
 ज्ञानं ॥ हो उं नि नी स सा व धां नं ॥ ब्रं हं स प न म दु यं ॥ ४६ ॥ न र दे हे ब्रं हं प्रा पि ॥ हे से मां
 लु नि नि ष्चि ति ॥ ह्रं गं सी वि श ये मा शं वे षं वि ॥ ब्रं हं ष्छी ति सा धि न ॥ ४७ ॥ हे से वी
 श्वा स तां आ पं गं ॥ शे क डि आ लि नां ग वं ॥ दे गं स वे कां ग के म रं गं ॥ हरि हरं जां गं ट
 वे नां ॥ ४८ ॥ ए वं दे हा ये ज नि वा र मं गं ॥ त के हां ये ठ क न क ले जां गं ॥ या ला गि पू वि
 वि आ पं गं नि ज स्वार्थु जां गं सा धा वा ॥ ४९ ॥ ध र तां ब र दे हा रीं गो डि ॥ अ व वि
 ति आ द के ये मू धा डी ॥ बु डे क नि ज स्वार्थु वि जो डि ॥ ते नि ज नि वा डी हरि सां गे ॥ ५० ॥

11901

11901

ॐ क ॥ छि द्य मां नं ये मे रे तेः ह्नु त नी उ व न स्प ति ॥ र व गः स्व क त मु सु ज्य स म या ति
 ह्यु तं प रः ॥ ५५ ॥ टी का ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com